प्रकाशनार्थ

पटना, **20** दिसम्बर। आज एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इन्स्टीच्यूट (आद्री) ने नेपाल में नियुक्त भारत के पूर्व राजदूत श्री के.वी. राजन द्वारा लिखी पुस्तक ''काठमांडू क्रॉनिकलः रिक्लेमिंग इंडिया-नेपाल रिलेशंस'' पर एक चर्चा का आयोजन किया। स्तंभकार श्री अतुल के. ठाकुर भी इस किताब के सह-लेखक हैं। श्री राजन ने कहा कि भारत और नेपाल को इतिहास से सीखना चाहिए और अपने-अपने दृष्टिकोण में बदलाव लाना चाहिए। एक जन-केन्द्रित नजरिया अपनाना चाहिए न कि यह कि कौन लोग सत्ता में विराजमान हैं। श्री राजन ने कहा कि यह नीति सफलता पूर्वक पिछले वर्षों में अपनाई भी गई है। उनका यह विश्वास है कि नेपाल-भारत रिश्तों में जो शक समाया हुआ है, वह आने वाले दिनों में बहुत कुछ लुप्त हो जाएगा। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में एक देश को अपने नीतियों का दूसरे देश पर होते प्रभाव का ख्याल रखना चाहिए।

श्री अतुल ठाकुर ने यह जाहिर किया कि भारत-नेपाल के नजदीकी संबंध उनके गहरे आर्थिक रिश्ते के कारण हैं। रोज **1200** से अधिक माल ढोने वाले ट्रक नेपाल व भारत के सीमा पर स्थित बीरगंज से गुजरते हैं। उन्होंने खेद प्रकट किया कि नेपाल की सरकार जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न समस्याओं से अपने लोगों को अवगत नहीं करा रही है। हालांकि नेपाली उद्योगपति और गैर-सरकारी संगठन इसके लिए काफी प्रसास कर रहे हैं।

इसके पहले आद्री के निदेशक प्रो0 अजित सिन्हा ने एम्बेसडर राजन का परिचय देने के साथ- साथ स्वागत भाषण भी दिया। इस मौके पर डा. अस्मिता गुप्ता, डा. सुनीता लाल, डा. उषाषी गुप्ता और अन्य गणमान्य व्यक्ति जूम से या सभागार में खुद मौजूद थे।

(अभिषेक प्रसाद)